

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वक्तव्य

(प्रथम संस्करण)

वेद भारतीय वाङ्मय और संस्कृति की अनुपम मणि-मंजूषा है। किन्तु, जो उसके अधिकारी होते हैं, वे ही उस मंजूषा से उन मणि-रत्नों का आहरण कर सकते हैं, जिनकी दीप्ति से भारतीय लोक-मानस अतीत काल में समुन्नत रहा है और भविष्य में समुन्नततर हो सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ—वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति—उन्हीं मणि-रत्नों की परख प्रस्तुत करता है। इस ग्रन्थ के प्रणेता वैदिक साहित्य के इने-गिने भारतीय विद्वानों में से एक हैं। आपने वेद पर और वेद-वर्णित विभिन्न रहस्यात्मक विषयों पर निर्मल दृष्टिकोण से विचार किया है। इन विचारों में आपके गहरे मानस-चिन्तन की जो पैठ दीख पड़ती है, कहना न होगा कि, वह आपके अन्तश्चक्षु के दर्शन का एक प्रोज्ज्वल प्रमाण है। आशा है, प्रस्तुत ग्रन्थ हमारे कथन की पुष्टि करेगा।

विद्वान् लेखक का परिचय देने की यहाँ आवश्यकता नहीं। सुधी समाज आपके नाम से परिचित है।

महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने परिषद् के आमन्त्रण पर, पटना पधारकर अपना यह लिखित भाषण, पाँच दिनों तक, (१९५८ ई० में १५ जनवरी से १९ जनवरी तक) किया था, जिन्हें सुधी श्रोताओं ने मुग्ध भाव से सुनकर अतीव हर्ष प्रकट किया था। हमें प्रसन्नता है कि वह भाषणमाला अब प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो रही है। इस ग्रन्थ में हिन्दी के यशस्वी लेखक और पुरातत्त्ववेत्ता डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने ग्रन्थ-प्रणेता और ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषयों पर, थोड़े में, जो सुचिन्तित भूमिका लिखी है, उसके लिए हम उनके अनुगृहीत हैं।

विश्वास है, परिषद् के अन्य बहुमूल्य प्रकाशनों की तरह यह ग्रन्थ भी समुचित समादर प्राप्त करेगा।

महाशिवरात्रि

१८८१ शकाब्द

वैद्यनाथ पाण्डेय

संचालक

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

गोलाई किसी भाग को ढक सकती है, छोटा नहीं बना सकती। इसके अतिरिक्त, भूमि के पदार्थों में यह मनमानी कल्पना चलाइए। सूर्य, चन्द्रमा, तारा आदि जो छोटे दिखाई देते हैं, उनमें भूमि की गोलाई कैसे प्रभाव डालेगी? इसलिए, वैदिक विज्ञान के 'छन्दोवेद' के प्रदर्शित प्रकार के अनुसार ही वस्तु के छोटी वा स्थानभ्रष्ट दीखने की उपपत्ति हो एकती है। और कल्पनाएँ निरी अटकल पर हैं, जो ठीक उतरती नहीं। इस प्रकार, 'वितान-वेद' और 'छन्दोवेद' से यह सिद्ध हुआ प्रत्येक वस्तु का हम तक प्राप्त होना और उसका ज्ञान होना 'वेद' से ही सम्भव है। इसलिए, विद् धातु के ज्ञान और लाभ (प्राप्ति) इन दोनों अर्थों का समन्वय घटित हो गया।

पूर्वोक्त शतपथब्राह्मण के पाठ में 'महोक्थ' और 'महाव्रत' शब्द और आये हैं। इनका सम्बन्ध 'रसवेद' से है। इसमें यह बताया जाता है कि प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति और स्थिति भी वेद के आधार पर ही है। हम पूर्व दो-एक जगह संक्षिप्त संकेत कर चुके हैं, और आगे 'यज्ञ-प्रकरण' में विशेष रूप से स्पष्ट करना है कि जड-चेतनात्मक प्रत्येक वस्तु से कुछ अंश (प्राण और वाक्) निकलते रहते हैं, और उनकी पूर्ति के लिए कुछ अंश बाहर से आते भी रहते हैं। ये आने और जानेवाले तत्त्व अग्नि नाम से वैदिक परिभाषा में कहे जाते हैं; क्योंकि अग्नि शब्द इस परिभाषा में प्राण का वाचक है, और प्राण-तत्त्व का ही आवगमन होता है। वाक् का अंश तो प्राण के साथ चला जाता वा आ जाता है, वह स्वतन्त्र नहीं। किन्तु, उस वाक् के अंश के कारण अग्नि के दो रूप हो जाते हैं—एक अग्नि और दूसरा सोम। 'अग्नीषोमात्मकं जगत्', यह श्रुति का सिद्धान्त है। वाक् के अंश की प्रधानता हो जाने पर 'सोम' नाम पड़ता है और प्राण की प्रधानता में 'अग्नि' नाम व्यवहृत है। यों प्राण की भी दो जातियाँ मान ली जाती हैं—आग्नेय प्राण और सौम्य प्राण। प्रत्येक पदार्थ में बाहर से सोम वा सौम्य प्राण ही आते हैं; क्योंकि सोम सर्वत्र व्यापक है, और वह अग्नि के द्वारा आकृष्ट होता है। अग्नि उसे अपनी ओर खींचकर अपने रूप में परिणत कर देता है, फिर सोम अग्नि-रूप ही हो गया और अग्नि-तत्त्व के रूप में ही निकलता है। आगे के आकर्षण से बाहर जाकर फिर वह अपने घन में मिलकर, सोम-रूप हो जाता है। इस तरह ये दोनों तत्त्व आपस में बदलते रहते हैं, इससे सिद्ध है कि मूलतः दोनों एक ही हैं, अवस्थाभेद-मात्र है। संसार में जिन पदार्थों में अद्र्वता वा चिकनापन देखा जाय, उनमें सोम की अधिकता समझनी चाहिए, और जिनमें रूक्षता वा तीक्ष्णता (तेजी) देखी जाय, उनमें अग्नि की अधिकता जाननी चाहिए। सोम कहाँ-कहाँ विशेष मात्रा में रहता है, वे पदार्थ वेद-मन्त्र में गिन दिये गये हैं :

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयंस्त्वं गाः ।

त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥

(ऋ० सं०, १।९।१२२)

हे सोम ! तुमने इन सब ओषधियों को उत्पन्न किया है, अर्थात् ओषधियों में तुम विशेष रूप से रहते हो। संस्कृत-भाषा में ओषधि उन्हें कहा जाता है, जिनका पौधा शीघ्र

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

आदि में सूक्तों, मन्त्रों आदि सबके ऋषि स्पष्ट लिखे हैं और मन्त्रों में भी यत्र-तत्र कर्त्ता का नाम स्पष्ट आ जाता है, तब कर्त्ता का नाम किसी को स्मरण नहीं, यह किस आधार पर माना जा सकता है। ऋषि लोग केवल प्रवचनकर्त्ता हैं, निर्माता नहीं, यह उक्ति ठीक नहीं उतरती; क्योंकि ऐसा मानने में प्रमाण क्या? वेदों को अपौरुषेय मान लेने पर प्रवचनकर्त्ता का नाम ऋषि है—यह सिद्ध होगा और ऋषि प्रवचनकर्त्ता ही हैं, निर्माता नहीं, यह मान लेने पर अपौरुषेयत्व सिद्ध होगा, यह एक प्रकार का असमाधेय अन्योन्याश्रय आ जाता है। सृष्टि-प्रलय-व्यवस्था सभी शास्त्रकारों ने मानी है, इसलिए 'न कदाचिदनीदृशं जगत्' (सदा से जगत् इसी प्रकार चला आ रहा है), यह मीमांसकों का कथन भी सबसे विरुद्ध ही है। हाँ, यदि अपौरुषेय का यह अर्थ किया जाय कि प्रमाणान्तर से अर्थ को जानकर स्वतन्त्रता से जो वाक्य प्रयोग किया जाता है, वह पौरुषेय है। वेद में ऐसा नहीं, इसलिए उन्हें अपौरुषेय कहना चाहिए, तो ऐसी अपौरुषेयता पर हमें कोई आपत्ति नहीं। क्योंकि, उनके अर्थों का ज्ञान लौकिक प्रमाणों से नहीं हो सकता, यह हम भी मानते हैं।

अब यहाँ एक प्रबल प्रश्न उठता है कि पूर्वोक्त पहले और दूसरे सिद्धान्तों की पुष्टि में जो श्रुति-स्मृतियों के प्रमाण दिये जा चुके हैं, उनकी क्या गति होगी? ज्ञान की दृष्टि से वा वृत्त्यात्मक विषय-ज्ञान की दृष्टि से अपौरुषेय वा ईश्वर-कृत कहा गया है, यह समाधान उपयुक्त नहीं प्रतीत होता; क्योंकि 'नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा' (यह नित्यवाणी है, स्वयम्भू ब्रह्मा ने इसे प्रकटमात्र किया है), 'अनादिनिधना नित्या...' आदि प्राचीन आप्तोक्त स्मृति में भी वेदवाणी को ही नित्य कहा है और 'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः' इत्यादि पूर्वोक्त पुरुषसूक्त के मन्त्र में ऋक्, यजुः, साम का नाम लेकर उनकी ईश्वर से उत्पत्ति बताई गई है, तब केवल ज्ञानरूप से नित्य कहने वा अर्थज्ञान ईश्वर-प्रदत्त होने के कारण ईश्वर-प्रणीत बता देने से उन प्रमाणों की स्पष्ट हत्या हो जायगी। इसलिए, अपौरुषेय वा ईश्वर-प्रणीत होना ही प्रमाणसिद्ध होता है—इसका मुख्य समाधान यह है कि वाक्-शब्द मन्त्र-ब्राह्मणात्मक वेद में केवल शब्द के लिए ही प्रयुक्त नहीं हुआ है, किन्तु सब जगत् के उपादान कारण-रूप भूतों की प्रथम अवस्था को वहाँ वाक् शब्द से कहा गया है। देखिए—'वागेवेदं सर्वम्' इस ऐतरेय ब्राह्मण में वाक् की सर्वरूपता बताई गई है। शतपथब्राह्मण की पुरुश्चरणश्रुति में (४।६।७।१) कहा गया है कि ऋक्, यजुः, साम नाम की जो तीन विद्याएँ हैं, उनमें यह पृथ्वी ही ऋक् है, अन्तरिक्ष ही यजुः है और द्युलोक ही साम है। यह एक साहस्री वाक् से उत्पन्न हुई है। दूसरा इन्द्र है और तीसरा विष्णु है, ऋक् और साम इन्द्र हैं, यजुः विष्णु हैं! ऋक् और साम से जो यजुः की उत्पत्ति हुई है, वह तेज से तेज की उत्पत्ति है। इन्द्र इसी को कहते हैं; जो तप रहा है, अर्थात् सूर्य का नाम इन्द्र है, यही सबका भरण-पोषण करनेवाला है इत्यादि। शतपथब्राह्मण, १०।१।२।१४। में भी कहा गया है कि 'यह अग्नि ही तीन प्रकार से प्रादुर्भूत है, जिसे वाक् कहा जाता है—वह आदित्य है। उसका मण्डल ऋक् है, प्रकाश साम है और मध्य में जो पुरुष-रूप तत्त्व है, वह यजुः है', इस प्रकार के ब्राह्मणों में प्राप्त शतशः विवरणों से विचारक विद्वानों को यह निश्चय हो जाता है कि वाक्, ऋक्, यजुः, साम आदि शब्द वैज्ञानिक अर्थों के लिए ही वहाँ प्रयुक्त हुए हैं। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

ज्ञान के उत्पादक और ज्ञान में अर्थ के साथ अनुस्यूत रहनेवाले शब्द-समूह को भी वेद कहते हैं और उस ज्ञान के विषयीभूत और शब्दों के वाच्य अर्थ को भी वेद कहा जाता है। वेद शब्द की व्याकरणानुसार भिन्न-भिन्न व्युत्पत्तियों से ये चारों ही अर्थ प्रकाशित हो जाते हैं। इनमें से वैज्ञानिक वेदों के उत्पादन में मनुष्य का कोई सामर्थ्य नहीं, वे ईश्वर-कृत, ईश्वर-निःश्वसित वा अपौरुषेय ही कहे जा सकते हैं। शब्द-समूह को विशेषण मानकर ज्ञान को विशेष्य मानने की दशा में भी वेद सर्वथा 'अपौरुषेय' ही हैं; क्योंकि ज्ञान स्वरूपतः नित्य है और ऋषियों के हृदय में ईश्वर की प्रेरणा से प्रादुर्भूत हुआ। वस्तुतः, ज्ञान ईश्वर का रूप है, इसलिए वेद को ईश्वर का रूप भी कहा जाता है। ज्ञान के विषयीभूत शब्दों के वाच्य अर्थ को, यदि वेद शब्द से लिया जाय, तो वेद को ईश्वर-निर्मित और ईश्वर-निःश्वसित कहा जाता है। यदि शब्द-समूह को ही प्रधान माना जाय, तो भी यह विचारना होगा कि कौन-सा शब्द-समूह? ज्ञान के साथ नित्य सम्मिलित पश्यन्ती वा मध्यमा वाक् का शब्द-समूह, अथवा वैखरी वाक् का शब्द-समूह। प्रथम पक्ष में भी वेदों की अपौरुषेयता वा ईश्वर-प्रणीतता ही रहेगी; क्योंकि पश्यन्ती वा मध्यमा के उत्पादन में मनुष्य का कोई व्यापार नहीं चल सकता। वे अर्थ के साथ नित्य सम्मिलित शब्द, शब्द-नित्यतावादियों के मत में अपौरुषेय हैं और अनित्यतावादियों के मत में ईश्वर-प्रणीत हैं। अब विवाद केवल वैखरी वाक् के शब्दों पर ही रह गया, वे भी शब्द-नित्यतावादियों के मत में अपौरुषेय हैं, ध्वनिमात्र पौरुषेय है, उससे अभिव्यंजित होनेवाला मुख्यस्फोट-रूप शब्द तो नित्य ही है। तब केवल आनुपूर्वी का सन्निवेश ऋषि-महर्षियों द्वारा माना जायगा। और, वाक्यस्फोट-रूप शब्द को नित्य मानने-वालों के मत में तो वाक्य-रूप आनुपूर्वी नित्य ही है, इसलिए उस आनुपूर्वी की अभिव्यंजक प्रथम ध्वनि के कर्त्ता होने मात्र से ऋषियों में कर्त्तृत्व का विश्राम होगा। अनित्यत्ववादियों के मत में भी लौकिक प्रमाणान्तर से अर्थ जानकर शब्द-प्रयोग करना, जैसा कि लौकिक शब्दों में होता है, वह तो वेद में है नहीं। ईश्वर-प्रसाद से ज्ञान प्राप्त कर केवल शब्दों का प्रयोग करने के कारण ऋषि-महर्षि प्रवक्ता या प्रणेता कहे जायेंगे। इस प्रकार, सूक्ष्म विचार करने पर वेद का कर्त्ता कौन है, इस विषय में कोई बड़ी विप्रतिपत्ति नहीं रहती, अधिकांश में उनकी अपौरुषेयता ही सिद्ध होती है। केवल बहुत थोड़े अंश में विवाद रहता है, जो नगण्य है। अतः, वेदों की अपौरुषेयता वा ईश्वर-प्रणीतता ही आर्य-संस्कृति में प्रधानतया मान्य है।

वेदों की विशेषता

अन्य शास्त्रों वा काव्यादि के शब्दों से वेद के शब्दों में विलक्षणता यही है कि अन्य शास्त्रों वा काव्यादि के शब्दों के प्रतिपाद्य अर्थों का ज्ञान उनके वक्ता को लौकिक प्रमाणों से होता है, दूसरे प्रमाणों से अर्थ-साक्षात्कार कर वे स्वतन्त्र रूप से शब्द-प्रयोग करते हैं, इसलिए वे ग्रन्थकर्त्ता कहे जाते हैं। किन्तु, वेद-शब्दों के वाच्यार्थ स्वर्ग, अपूर्व, देवता आदि का स्फुट ज्ञान प्रमाणान्तर से सम्भव नहीं। यहाँ वह ज्ञान, योग, समाधि आदि द्वारा प्रसादित ईश्वर के द्वारा ही प्रदत्त है और उस ज्ञान का मूल दूसरा कोई शब्द भी नहीं कहा

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

नहीं की गई। इन्द्रियों से गृहीत होनेवाले पृथ्वी, जल, तेज आदि पंचीकृत रूप हैं। इनमें सब तन्मात्राओं के अंश मिले हुए हैं, इसलिए इनकी योगजता स्पष्ट ही है। फिर, किस बात का खण्डन साइण्टिस्ट विद्वानों द्वारा हुआ और किस विज्ञान की जड़ उखाड़ी गई!

यह हुई दर्शन-शास्त्रों की बात। हमारा प्रकृत विषय तो वैदिक विज्ञान है। वैदिक विज्ञान में तो मौलिक तत्त्व केवल रस और बल हैं। आगे के सब योगज हैं। इसी बात को स्पष्ट करने के हेतु हमने आरम्भ से सृष्टि-प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जिस मौलिक तत्त्व की खोज वैदिक विज्ञान ने की है, उसका तो स्वप्न भी पाश्चात्य विज्ञान को कितने समय बाद होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता। पंचमहाभूत-सिद्धान्त के आधार तो हमारे ये ही हैं कि हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं—श्रोत्र, त्वक्, चक्षु रसना और घ्राण। इनसे गृहीत होनेवाले विषय भी पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध। कर्मेन्द्रियाँ भी पाँच हैं, जो इन भूतों पर कार्य करती हैं—वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ। जगत् का चक्र चलानेवाले मण्डल भी पाँच हैं, जिनका दिग्दर्शन इसी प्रकरण में कराया जा चुका है। तब इनकी व्याप्ति के लोक भी पाँच हैं, जिनको पंच महाभूत के नाम से कहा जाता है। प्रत्येक भूत की अनेक अवस्थाओं का वर्णन वेदों में प्राप्त होता है, जिसका दिग्दर्शन संक्षेप में स्थान-स्थान पर किया गया है। जितना विश्लेषण वैदिक विज्ञान ने किया है, उतना तो अभी पाश्चात्य साइंस कर भी न सका। जैसा कि श्रुति और पुराणों में वायु को मरुत् नाम से ४९ प्रकार का बताया गया है। इनके सम्बन्ध से अग्नि के भी ४९ भेद किये गये हैं। इन ४९ अग्नि और ४९ वायु के पृथक्-पृथक् नाम और कार्य भी पुराणों में वर्णित हैं। यह प्रत्येक तत्त्व के अवस्था-भेद का विश्लेषण ही है। इन अवस्थाओं में आदि की अवस्था, मध्य की अवस्था और वर्तमान में प्राप्त होनेवाली अवस्थाएँ सभी अन्तर्गत हो जाती हैं। अग्नि कितने प्रकार की होती है, यह तो हम अनेक बार स्पष्ट करते आये हैं। आरम्भ से ही हमने बतलाया है कि मुख्य रूप से अग्नि प्राण-तत्त्व का नाम है, जिसमें रूप, रस, गन्धादि कुछ नहीं होते। रूप, रसादि आगे चलकर इसकी अवस्थाएँ बनती हैं। फिर, वर्तमान साइंस यदि ताप को एक अवस्था-विशेष कहता है, तो नई बात कोई नहीं है। हाँ, किसकी अवस्था वह है, इसका स्पष्ट पता भी वैदिक विज्ञान देता है। अवस्था किसी तत्त्व की होती है। इसलिए, केवल अवस्था कहकर तत्त्व का खण्डन कर देना भारी भूल है।

जल की तो ४ अवस्थाएँ स्पष्ट अक्षरों में वेदों में वर्णित हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में बताया गया है कि आत्मा-रूप मूल तत्त्व ने जिस जल को (अप्-तत्त्व को) उत्पन्न किया, वह चार अवस्थाओं में चार नामों से चार लोकों में व्याप्त है। उनके नाम हैं—अम्भ, मरीचि, भर् और आप्।^१ अम्भः इनमें वह है, जो सूर्य-मण्डल से (द्युलोक से) भी ऊर्ध्व-प्रदेश में

१ आत्मा वा इममेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किञ्चन मिषत्। स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति स इमांल्लोकानसृजत अम्भो मरीचिर्भर आपः। अदोऽम्भः परेण दिवम् द्यौः प्रतिष्ठाः अन्तरिक्षं मरीचयः, पृथिवी मरः, या अधस्तात्ता आपः। स ईक्षतेमे नु लोका लोकपालान्नु सृजा इति सोऽद्भ्य एव पुरुषं समुद्घृत्वा मुञ्चयत्। (ऐ० उ०, ४।१)

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

जैसा कि पर्वत में कई जगह देखा जाता है। ये भूमिस्थ जल के ही अवान्तर विभाग हैं। अस्तु; अब विचारणीय विषय यह है कि दिव्य और आन्तरिक्ष जल कौन-से हैं। निःसन्देह, स्थूल दृष्टि से इनका पता लगना कठिन है, किन्तु विचारपूर्वक वेद, पुराणों का मनन करने पर इनका स्पष्टीकरण दुर्लभ नहीं।

ब्राह्मण, उपनिषद्, मनुस्मृति, पुराण आदि में सर्वत्र सृष्टि के आरम्भ में अप् की उत्पत्ति कही गई है। अप् नाम यद्यपि जल का ही प्रसिद्ध है, किन्तु इस स्थूल जल से वहाँ तात्पर्य नहीं, रस-रूप द्रव पदार्थ वहाँ अप् या अम्भः शब्द का अर्थ है। स्थूलभूत होने पर वही जल बन जाता है। वही अप् या अम्भः दिव्य जल कहने योग्य है। यद्यपि दोनों एक ही तत्त्व से प्रादुर्भूत हैं, किन्तु अवस्थाओं में एक दूसरे से विरोध हो जाता है।

वह ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापक है—‘सर्वमापोमयं जगत्’। वेद-मन्त्रों में कहा है कि चन्द्रमा अप् के भीतर होकर दौड़ता है। सूर्य^२ के समीप और सूर्य के साथ अप् वर्तमान है। सूर्य और अग्नि अप् में ही पैदा होते हैं^३ इत्यादि। भगवान् सूर्य जब उदयाचल पर आते हैं, तब उनकी किरणों के संघर्ष से वह अप् अपना स्थान छोड़कर दूर हटता जाता है। रस-रूप होने के कारण तेज के साथ इस अप् का स्वाभाविक विरोध है। अतएव, जहाँतक सूर्य की किरणें प्रखरता से फैलती हैं, वहाँ से उतने प्रदेश के अप् को दूर हटाती जाती हैं। ध्रुव-प्रदेश में जहाँ सूर्य-किरण अति मन्द हो जाती है, वहाँ वह अप् इकट्ठा हो जाता है। बहुत इकट्ठा हो जाने के कारण वहाँ वह घनीभूत होकर स्थूल जल के रूप में आ जाता है और गुरुत्व के कारण वायु में नहीं ठहर सकता, अतः सुमेरु के शिखर पर गिर पड़ता है। उसे ही कहते हैं—गंगा।

पुराण, इतिहासों में सर्वत्र ध्रुव के ऊपर से सुमेरु पर गंगा के जल का गिरना वर्णित है। ध्रुवस्थान ही हमारे इस ब्रह्माण्ड की परिधि है। यह कहा जा चुका कि ब्रह्माण्ड वेद में एक पारिभाषिक शब्द है। आकाश अनन्त है, उसका जितना भाग एक सूर्य से प्रकाशित हो, उसे एक ब्रह्माण्ड कहेंगे। अनन्त आकाश में संख्यातीत सूर्य और उतने ही ब्रह्माण्ड हैं। पूर्वोक्त अप्-तत्त्व फैला हुआ है। हमारे ब्रह्माण्ड की परिधि से दूसरे ब्रह्माण्डों की परिधि भी मिल जाती है। अर्थात्, ऐसा भी आकाश का प्रदेश है, जहाँ एक सूर्य का प्रकाश समाप्त होकर दूसरे सूर्य के प्रकाश का प्रारम्भ होता है। यही कारण है कि दूसरे ब्रह्माण्डों का अप्-तत्त्व भी जो कि दूसरे सूर्यों की किरणों के संघर्ष से परिधि तक घनीभूत हो गया है, हमारे ब्रह्माण्ड के अप् के साथ मिलकर वह गंगा-रूप में आ जाता है। अतएव, पुराणों में गंगा नदी को अपर ब्रह्माण्ड की जलधारा भी कहते हैं। यह भी पुराणों में उपवर्णित है कि वामनावतार में चरण-प्रहार होने पर नखाग्र से ब्रह्माण्ड का जो ऊपरी गोल टूटा, वहाँ से यह जलधारा भीतर प्रविष्ट होती है। इस घटना का अभिप्राय स्पष्ट

१. चन्द्रमा अप्सन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।

२. असूर्या उपसूर्ये यामिर्बा सूर्यः यह तानो हिन्वन्त्वध्वरम्। (ऋग्वेद, १।२३।१७)

३. हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यह सुजातः सविता या स्वातिः। (अथ०, १।६।३३।१)

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।९०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आयों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

महिषासो मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यवः ।
मृगा इव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्धम् ॥

(ऋ०, १।६४।७)

इस एक मन्त्र में महिष, मृग, हस्ती आदि कई पशुओं के नाम आये हैं :

प्रहित्वा पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमेभिः कृण्व ऋणवो यथा

मृध उष्ट्रो न पीपरो मृधः । (ऋ० १।१३।२)

उवानट् ककुहो दिवमुष्ट्रान् चतुर्गुजो दवत् ।

श्ववसा याद्वं जनम् । (ऋ० ८।६।४९)

इत्यादि में उष्ट्र का नाम बहुधा आया है ।

या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकञ्च रक्षति ।

श्वेन पतत्रिणं सिंहम् । (यजुः, १९।१०)

इसमें व्याघ्र, वृक, सिंह आदि के भी नाम स्पष्ट हैं

इससे यह सिद्ध नहीं होता कि चार या पाँच पशुओं का परिचय ऋषियों को था । वेद की परिभाषा न जानने के कारण ही वेद के सम्बन्ध में ऐसी ऊटपटाँग कल्पनाएँ बहुत चल रही हैं । अस्तु; अपने प्रसंग पर आइए । अब हम ऋषि, पितृ और देव का संक्षिप्त विवरण उदाहरण-रूप में कर देते हैं ।

ऋषि

कहा जा चुका है कि क्षरपुरुष की जो प्रथम कला प्राण नाम से कही गई है, उसका प्रथम रूप ऋषि ही है । इसमें शतपथब्राह्मण का प्रमाण भी पूर्व उद्धृत कर चुके हैं । इन ऋषियों के सम्बन्ध में शतपथब्राह्मण के षष्ठ काण्ड के आरम्भ^१ में ही बताया गया है कि ये सात रूप में विभक्त होकर रहते हैं । इनमें दो-दो मिलकर चार मध्य में रहा करते हैं और दो उनके पक्ष-रूप से बाहर निकले रहते हैं ।^२ मन्त्र में भी इन सातों की स्थिति का संकेत है । यही पक्षियों में पक्ष पैदा कर देते हैं, इसलिए सामान्यतः इन दो को पक्ष ही कहा जाता है और एक पुच्छ-रूप से अकेला नीचे को लटक जाता है और इन सातों का सार भाग श्री-रूप से ऊपर निकलकर शिर के रूप में बन जाता है । वह सबकी श्री है, इसीलिए उसका नाम शिर हुआ है । इसका निदर्शन अपने-अपने शरीर में देखिए । मनुष्य के शरीर में चार पृथक्-पृथक्

१. स योऽयं मध्ये प्राणः एष एवेन्द्रस्तानेष प्राणान्मध्यत इन्द्रियेणैन्ध, यदैन्ध, तस्मादिन्ध, इन्धो ह वै तमिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षं, परोक्षं कामा हि देवास्त इन्द्रा सप्त नाना पुरुषानसृजन्त । तेऽब्रुवन् न वा इत्थं सन्तः शक्यामः प्रजनयितुमिमान्सप्त पुरुषानेकं पुरुषं करबामेति, त एतान्सप्त पुरुषानेकं पुरुषमकरोत् ।

—शतपथ०, काण्ड ६, अध्याय १, ब्राह्मण १ ।

२. साकज्जानां सप्तथमादुरेकं षडिद् यमा ऋषयो देवजा इति ।
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रञ्जन्ति विकृतानि रूपशः ॥

—ऋग्वेद-संहिता, १।१६४।१५ ।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।१०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आयों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

मास अथवा महीना कहा जाता है। इनमें परिव्याप्त सूर्य-प्राण और पृथ्वी-प्राण गति-क्रम में शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष नाम से कहे गये हैं। उस एक मास में शुक्ल और कृष्ण दो-दो भाग होने से संवत्सर के २४ विभाग बन जाते हैं। यही संवत्सर का दूसरा विभाग है।

३. ऋतु-क्रम से संवत्सर का तीसरा विभाग होता है। तीन ऋतुएँ प्रधानतया होती हैं—शीत, वर्षा और ग्रीष्म। प्रत्येक ऋतु चार-चार महीनों की होती है। इसलिए, ऋतु-क्रम से संवत्सर के तीन भाग हो जाते हैं।

४. अयन के क्रम से संवत्सर का चतुर्थ भाग हो जाता है। प्रत्येक संवत्सर में छह महीनों तक सूर्य विषुवद्-वृत्त से उत्तर की ओर रहता है। इसमें ऐसी प्रतीति होती है कि पृथ्वी नीचे की ओर है और सूर्य ऊपर की। परन्तु, दूसरे छह महीनों में सूर्य विषुवद्-वृत्त से दक्षिण की ओर रहता है। सूर्य या पृथ्वी की इसी गति के कारण पूरे संवत्सर के दक्षिणायन, उत्तरायण भेद से दो विभाग हो जाते हैं। सूर्य की उत्तरायण-गति को शुक्ल तथा दक्षिणायन-गति को कृष्ण कहा जाता है। इनमें परिव्याप्त प्राण अयन शब्द से गति-प्रक्रिया में कहे गये हैं।

५. संवत्सर का जो पाँचवाँ विभाग है, वह पूर्ण है, अर्थात् एक है।

संवत्सर के इन पाँच प्रकार के विभागों में भिन्न-भिन्न रूपों की पाँच प्रकार की अग्नि है। भिन्न-भिन्न अग्नियों में भिन्न-भिन्न प्रकार से ही आहुतियाँ देकर सोमयज्ञ सम्पन्न किये जाते हैं। यह सोमयाग चार प्रकार का होता है—एकाह, अहीन, रात्रि-सत्र और अयन-सत्र। एकाह वह है, जो यज्ञ एक ही अहोरात्र में पूर्ण हो जाता है। दस अहोरात्रों में पूर्ण होनेवाले यज्ञ को अहीन कहा जाता है, दशाह भी उसका एक नाम है। शत अहोरात्रों में पूर्ण होनेवाले यज्ञ को रात्रि-सत्र की संज्ञा दी जाती है तथा एक सहस्र अहोरात्र में पूर्णता को प्राप्त करनेवाला सत्र अयन-सत्र नाम से सम्बोधित है। इन सारे यज्ञों का तात्पर्य संवत्सर के छोटे और बड़े भागों के संस्कार या उनकी शुद्धि है। इन यज्ञों से किसी-न-किसी प्रकार संवत्सर का ही संस्कार होता है। संवत्सर के संस्कार करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए ही छोटे-छोटे यज्ञ किये जाते हैं। इनको १. अग्निहोत्र, २. दर्शपूर्णमास, ३. चातुर्मास्य और ४. पशुबन्ध कहते हैं। इनमें अग्निहोत्र नाम के यज्ञ से संवत्सर के अहोरात्र-विभाग का संस्कार होता है, दर्शपूर्णमास से पक्ष या मासों का संस्कार सम्पन्न होता है, चातुर्मास्य से ऋतु-विभाग का तथा पशुबन्ध से अयन का संस्कार होता है। संवत्सर, फिर सोम-यागानुष्ठान से पूर्ण संवत्सर का संस्कार होता है। ये ही यज्ञ हैं। इनके अतिरिक्त जितने प्रकार के अन्य यज्ञ शास्त्रों में आते हैं, वे सब इन्हीं यज्ञों के अन्तर्गत हैं। यज्ञों से स्वर्ग-कामना की सिद्धिवाली जो बात है, उसका तात्पर्य यह है कि यज्ञों के अनुष्ठान से सूर्य-संवत्सर के अनुसार यजमान के शरीरस्थ वैश्वानराग्नि भी संस्कारयुक्त हो जाती है और शरीर छोड़ने के बाद वह वैश्वानर सूर्य-संवत्सर में स्थित हो जाता है। इसी सम्मिलन से स्वर्गसुख सम्भव है। यह संवत्सररग्नि का विस्तार हुआ।

इस संवत्सराग्नि के शुक्ल भाग में ही जिनकी क्रमिक गति होती है, उनका विवरण पूर्वोक्त उपनिषद् में किया गया। यहाँ सूर्य-मण्डल से ऊपर जो चन्द्रमा बताया है, वह परमेष्ठी-मण्डल है। सोमप्रधान होने के कारण उसे भी चन्द्रमा कहा जाता है। उसके आगे विद्युत् की प्राप्ति कही गई है। विद्युत् तपः आ तपोलोक नाम से जो छठा लोक हमने सात लोकों के प्रकरण में (क्षरपुरुष की आधिभौतिक कलाओं में) बताया है, वह यहाँ विद्युत् नाम से कहा गया है। क्योंकि, उसी लोक में सबसे प्रथम विद्युत् का प्रावुर्भाव होता है। यह सौम्य विद्युत् है, जिसका निरूपण आगे देव-प्रकरण में किया जायगा। मानस-पुरुष स्वयम्भू-मण्डल का अधिष्ठाता है।

पितृलोक-गति

अब कृष्ण-मार्ग की गति का विवरण छान्दोग्य-उपनिषद् में इस प्रकार है कि जो विद्यारहित इष्टापूर्त्तादि उत्तम कर्मों का ही अनुष्ठान अपने जन्म में करते रहते हैं, वे आत्मा शरीर से निकलकर प्रथमतः धूम में जाते हैं। इसका आशय कुछ विद्वान् यों लगाते हैं कि मृत शरीर का जब दाह किया जाता है, तब शरीर को छोड़कर भी उसपर मड़राता हुआ जो सूक्ष्म शरीर अग्नि की ज्वाला में होकर निकलता है, वह तो शुक्लमार्ग का पथिक हुआ और जो धुआँ में होकर निकलता है, वह कृष्णमार्ग का पथिक बनता है। जेधन्य तृतीय गति में जानेवाला दोनों ही से नहीं निकलता, किन्तु भस्म में अनुप्रविष्ट रहकर पृथ्वी में ही रह जाता है। इससे यह भी श्रुति का आशय सिद्ध होता है कि शुक्ल-कृष्ण-गति उन्हीं की बनती है, जिनका शरीर जलाया जाता है। कुछ विद्वान् अग्नि और धूम का अर्थ केवल प्रकाश और तम ही करते हैं। उनकी व्याख्या के अनुसार अग्नि में दाह न होने पर भी कर्मनुसार ये गतियाँ हो जाती हैं। अस्तु; कृष्णमार्ग वा धूममार्ग का क्रम इस प्रकार है कि धूम से रात्रि में, रात्रि से कृष्णपक्ष में, कृष्णपक्ष से दक्षिणायन के मासों में गति होती है। संवत्सराग्नि में अभिव्याप्त रूप से ये आत्मा नहीं जा सकते, कृष्णभाग में ही रहते हैं। दक्षिणायन के मासों से पितृलोक में, पितृलोकों से चन्द्र-मण्डल के समीपवर्ती लोकों में चले जाते हैं। वहाँ से आकाश में होकर चन्द्र-मण्डल में पहुँच जाते हैं, चन्द्र-मण्डल में पहुँच वहाँ के सोम के साथ मिल जाते हैं और अपने पुण्य के अनुसार वहाँ भोगकर फिर पृथ्वी पर लौट आते हैं। यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि अपने किये कर्मों का भोग जब चन्द्र-मण्डल में समाप्त हो गया, तब फिर भूमि में कौन-से कर्मों के भोग के लिए जन्म लेगा। वैदिक सिद्धान्त में बिना कर्मफल के तो कोई जन्म होता ही नहीं। कर्महीन ही सब जन्म हैं, तब कर्मफल भोगने के अनन्तर फिर जन्म कैसे? इसका उत्तर शास्त्रों में दिया गया है कि कर्म विभिन्न प्रकार के होते हैं। कितने कर्म ऐसे होते हैं, जिनका फल परलोक में ही भोगना

१. अथ य इमे आग्ने इष्टापूर्त्ते दत्तिमित्युपासते ते धूममभिसम्भवन्ति। धूमाद्रात्रिम्, रात्रेरपरपक्षम्, अपरपक्षात् यान् षड् दक्षिण इति मासांस्तान्, नैते संवत्सरमभिव्याप्नुवन्ति मासेभ्यः पितृलोकम् पितृलोकाद् आकाशम्, आकाशाच्चन्द्रमसम्, एष सोमो राजा।

—छान्दोग्य उप०, प्रपा० ५, खण्ड १०, कण्डिका ३, ४।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

अंश सूक्ष्म शरीरों को पहुँचा दिया जाता है। वे इतने से ही तृप्त हो जाते हैं। किन्तु, विदेश जानेवालों को तो स्थूल शरीर को तृप्त करने के लिए प्रचुर स्थूल अन्न की आवश्यकता है। वह किरणों द्वारा कैसे पहुँचाया जा सकता है।

पुनः प्रश्न उठता है कि पितृलोक के मार्ग में शतशः-सहस्रशः सूक्ष्म शरीर जा रहे होंगे, और पितृलोक में भी हजारों निवास कर रहे होंगे, तब एक व्यक्ति का दिया हुआ अन्न-पानादि उसके पिता-माता को ही प्राप्त हो, यह नियम किस आधार पर होगा। इसका वैज्ञानिक उत्तर है कि पिता-माता का सूत्र पुत्र आदि के साथ बँधा हुआ है। वह सूत्र ही उस अन्न-पानादि को इसके माता-पिता के पास ही पहुँचा देता है। इसका विवरण इस प्रकार है कि प्रत्येक मनुष्य का, सन्तानोत्पादन की शक्ति रखनेवाला जो शुक्र है, उसमें चौरासी अंश होते हैं, जिन्हें वैदिक विज्ञान में 'सहः' नाम से कहा जाता है। इनमें छप्पन अंश पूर्वपुरुषों से प्राप्त हुए हैं और २८ अंश इसके अपने अन्नपानादि द्वारा उपार्जित हैं। ५६ अंश जो पूर्वपुरुषों के बताये गये, उनमें से २१ इसके पिता के, १५ पितामह के, १० प्रपितामह के, ६ चतुर्थ पुरुष के, ३ पंचम पुरुष के और १ छठे पूर्वपुरुष का है। इन चौरासी अंशों में से यह भी सन्तानोत्पादन के लिए ५६ अंश का शुक्र-निर्वाप करेगा, जिनमें २१ अंश इसके अपने उपार्जित २८ में से जायेंगे और ३५ पूर्व पुरुषों के ५६ में से जायेंगे। उनमें भी १५ इस पिता के अपने पिता के होंगे। १० पितामह के, ६ प्रपितामह के, ३ चतुर्थ पुरुष के और एक अपने से पूर्व के पंचम पुरुष का होगा। अपने से पूर्व के षष्ठ पुरुष का जो एकमात्र अंश इस व्यक्ति में था, वह सूक्ष्म होने के कारण इसकी सन्तान में नहीं जायगा। यही क्रम आगे पौत्रादि में भी चलेगा, अर्थात् इस व्यक्ति के पौत्र में इसके १५ अंश, प्रपौत्र में १० अंश, चतुर्थ सन्तति में ६ अंश, पंचम सन्तान में ३ अंश और षष्ठ सन्तान में एक अंश पहुँचेगा। इसी सूत्र के कारण शास्त्रों में एक व्यक्ति को मध्य में रखकर उसका ६ पूर्व-पुरुषों से और ६ आगे की सन्तति से सापिण्ड्य माना जाता है। अपने-आप १ और आगे के ६ सन्तान यों सात पुरुष तक सापिण्ड्य चलता है—'सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्'। अपने से अष्टम पुरुष में जाकर सापिण्ड्य निवृत्त हो जाता है; क्योंकि वहाँ इसका कोई अंश नहीं पहुँचता। इनमें भी १० या इससे अधिक अंश जिसमें गये हैं या जिन पूर्वपुरुषों के अपने-आप में है, वे ऊपर और नीचे के तीन-तीन पुरुष मुख्य सपिण्ड हैं, अर्थात् १० तक अंश का घनीभूत होने के कारण पिण्ड नाम पड़ जाता है। इसलिए, श्राद्ध में पिण्ड तीन ही पुरुषों को दिया जाता है। आगे के ६, ३ और १ अंशवाले केवल लेपभाक्, अर्थात् लेपमात्र से तृप्त होनेवाले कहे जाते हैं :

लेपमाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः ।

सप्तमः पिण्डवश तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम् ॥

इसका अर्थ ऊपर किया जा चुका है। यही सापिण्ड्य-सूत्र का वर्णन है। भारतीय संस्कृति में विवाह श्राद्ध और अशौच के विचार में इसी सापिण्ड्य को देखना पड़ता है। जिस कन्या के साथ सात पुरुष तक अपना सम्बन्ध मिलता हो, उसके साथ विवाह करना

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।१०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आयों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।९०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आयों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

द्विजानामपि मृज्यते' (मनु), 'एवमेनः शमं याति बीजगर्भसमुद्भवम्' (याज्ञवल्क्य) । संस्कारों के संकल्प में भी बोला जाता है कि 'बीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिवर्हणद्वारा परमेश्वर-प्रोत्थर्थमित्यादि ।' (एनस् शब्द पाप वा दोष का वाचक है ।)

यों तो संस्कारों की बहुत बड़ी संख्या भी धर्मशास्त्रों में मिलती है । गौतमसूत्र के द्वाँवें अध्याय में अड़तालीस संस्कार लिखे गये हैं । 'अष्टचत्वारिंशता संस्कारैः संस्कृतः' इत्यादि । जैसे : (१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) सीमन्तोन्नयन, (४) जातकर्म, (५) नामकरण, (६) अन्नप्राशन, (७) चौल, (८) उपनयन, (९-१२) चार वेदव्रत, (क. महानाम्नी व्रत, ख. उपनिषद् व्रत, ग. महाव्रत और घ. गोदान), (१३) स्नान, (१४) विवाह, (१५-१९) पंच महायज्ञ (क. ब्रह्मयज्ञ, ख. देवयज्ञ, ग. पितृयज्ञ, घ. भूतयज्ञ, और ङ. मनुष्ययज्ञ, (२०-२६) सप्त पाकयज्ञ (क. अष्टका, ख. पार्वणश्राद्ध, ग. श्रावणी, घ. आग्रहायणी, ङ. चैत्री और च. आश्वयुजी), (२७-३३) सप्त हविर्यज्ञ (क. अग्न्याधान, ख. अग्निहोत्र, ग. दर्शपूर्णमास, घ. चातुर्मास्य, ङ. आग्रायणेष्टि, च. विरूढ पशुबन्ध और छ. सौत्रामणि), (३४-४०) सप्त सोमयज्ञ (क. अग्निष्टोम, ख. अव्यग्निष्टोम, ग. उत्थ, घ. षोडशी, ङ. वाजपेय, च. अतिरात्र और छ. अपयोर्यामि) (४१) दया, (४२) क्षमा, (४३) अनसूया, (४४) शौच, (४५) अनायास, (४६) मंगल, (४७) अकार्पण्य रऔ (४८) अस्पृहा । सुमन्तु ने पच्चीस संस्कार लिखे हैं, किन्तु इनके अधिकतर अतिशयाधान रूप संस्कार हैं । उन्हें दैव संस्कार कहा गया है, जिसका तात्पर्य यह है कि देवता बना देने के उपयोगी इन अड़तालीस संस्कारों में वेद के सब यज्ञ आदि भी सम्मिलित हो जाते हैं, जिनके द्वारा मनुष्य में एक दैवात्मा उत्पन्न कर दिया जाता है, और वह आत्मा उसे अवश्य देवताओं में सम्मिलित कर देता है । अस्तु; यह दूर की बात है, भगवान् व्यास ने अपनी स्मृति में इस युग के उपयोगी तो सोलह संस्कार लिखे हैं, जिनका नाम गौतम सूत्र के आरम्भ में आया है, जिनकी आज भी हिन्दू-जाति में चर्चा है । वे भी सब-के-सब तो आज समाज के बहुत अल्प अंश में प्रचलित हैं, किन्तु कुछ संस्कार सभी द्विजों में चलते हैं ।

धर्म-ग्रन्थों में ये संस्कार आडम्बरशून्य वैज्ञानिक विधियों के रूप में हैं । किन्तु, आज जो संस्कार प्रचलित भी हैं, उनमें बाह्याडम्बर ने अधिक स्थान ले लिया है । वैज्ञानिक विधियों पर बहुत कम ध्यान रह गया है । समय-समय कई नेताओं ने इनके सुव्यवस्थित रूप में पुनः प्रचार करने का उद्योग किया, जैसे श्रीस्वामी दयानन्दजी ने आर्य जाति में संस्कारों के पुनः प्रचार करने की बहुत-कुछ योजना की, किन्तु समय के प्रभाव से इस अंश में उन नेताओं को सफलता न मिल सकी ।

इन संस्कारों की शास्त्रीय पद्धति पर ध्यान दिया जाय, तो विचार से स्पष्ट भाषित होगा कि ये विधियाँ वैज्ञानिक हैं । उनमें अधिकांश का सम्बन्ध मनोविज्ञान से है । भौतिक विज्ञान के आधार पर भी बहुत-से कार्य उत्तम होते हैं । प्रत्येक अंश पर विचार करने के लिए तो एक बड़े ग्रन्थ की आवश्यकता हो जाती है । इसलिए, इस लेख में कुछ अंशों पर ही प्रकाश डाला जा सकता है । बालक को सामने बैठकर माता-पिता वेद-मन्त्रों की सहायता से

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।१०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आयों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

वेदाध्ययन होता था और पौष की अष्टमी के अनन्तर शुक्लपक्ष में वेद और कृष्णपक्ष में वेदांग पढ़े जाते थे। इस आरम्भ के दिन चित्त और शरीर की शुद्धि के लिए विभिन्न प्रकार की अपामार्ग, दूर्वा (दूब) आदि ओषधियों से स्नान का विधान है। गोमय, भस्म आदि शुद्ध पदार्थों का भी उपयोग किया जाता है। इनसे शरीर और अन्तःकरण की शुद्धि कर वेदाध्ययन और अध्यापन में शिष्य और गुरु प्रवृत्त होते हैं। जब ओषधियाँ उत्पन्न हो जायँ और वर्षा से ग्रीष्म का आतप शान्त हो जाय, तभी इसका विधान है। रक्षाबन्धन भी इस दिन बड़े महत्त्व की वस्तु है। इससे गुरु, शिष्य, भ्राता, भगिनी आदि का सम्बन्ध दृढ़ किया जाता है।

नवरात्र और विजयादशमी

दूसरा उत्सव आश्विन शुक्ल की विजयादशमी है। कई एक विवेचक विद्वानों का कथन है कि यह संसार एक रणक्षेत्र है, प्रत्येक जीव को संसार में दूसरे जीवों से संघर्ष करना पड़ता है, इसलिए इसे रणक्षेत्र (मैदाने जंग) कहना युक्ति-युक्त होता है। जीव संसार में क्या आता है, मानों एक रणक्षेत्र में उतरता है। इस रणक्षेत्र में यद्यपि प्रत्येक जीव विजय चाहता है, हर एक की यह इच्छा रहती है कि मैं ही उन्नति की दौड़ में सबसे आगे रहूँ, किसी से एक अंगुल पीछे रहना कोई नहीं चाहता, सभी उत्सुक हैं कि विजय-श्री हमें ही वरमाला पहनाये, किन्तु इच्छा-मात्र रखने से विजय-श्री किसी को नहीं मिलती। विजय मिलना शक्ति पर अवलम्बित है, जिसमें जितनी शक्ति होगी, उतने ही दरजे तक वह संसार-क्षेत्र में विजयी होगा। इस सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए किसी युक्ति-प्रमाण की आवश्यकता नहीं, यह संसार में प्रति क्षण प्रत्यक्ष देखा जाता है। विशाल वृक्ष छोटे-छोटे पौधों की खुराक छीनकर अपना विस्तार फैलाते हैं, बड़े जल-जन्तु छोटों को निगलकर अपना स्वरूप बढ़ाते हैं, सबल पशु निर्बलों को अपने सामने खाने तक नहीं देता, शक्तिशाली उल्लू अपने से अल्पशक्ति कौओं के घोंसले तोड़-मरोड़कर फेंक देता है। कहाँ तक कहें, जहाँ शक्ति है, वहाँ विजय है, यह दृश्य चारों ओर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। इसीलिए, हमारे शास्त्रों ने पहले नवरात्र में शक्ति की उपासना करने के अनन्तर दशमी को विजय का उत्सव मनाने की शिक्षा दी है, शक्त्युपासना और विजय का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है।

हमारे शास्त्र इस जगत् को दो प्रकार के भाव से देखते हैं—व्यष्टि-रूप से और समष्टि-रूप से। व्यष्टि, अर्थात् अलग-अलग और समष्टि, अर्थात् समूह, समुदाय। प्रत्येक जीव या जड़ अपनी पृथक्-पृथक् रहने की दशा में एक-एक व्यष्टि है, किन्तु जहाँ यह पृथक्त्व मिटकर एकरूपता भासित होती है, वह समष्टि है। व्यष्टि जीव उपासक है, और समष्टि जगन्नियन्ता परमात्मा उपास्य। कहीं व्यष्टि से समष्टि बनती है और कहीं समष्टि से व्यष्टि की रचना आरम्भ होती है। एक-एक वृक्ष मिलकर वन बन गया। यह व्यष्टि से समष्टि की उत्पत्ति कही जाती है। किन्तु, एक अग्नि की ज्वाला से विस्फुलिङ्ग (छोटे-छोटे अग्नि-कण) अलग-अलग निकल पड़े, वा एक मेघ से जल बरसकर पृथक्-पृथक् जल के स्रोत बन गये, या एक अनन्त आकाश से पृथक्-पृथक् मठाकाश, गृहाकाश, घटाकाश बन गये, यह सब समष्टि से व्यष्टि का विकास है। ईश्वर से जगत् की उत्पत्ति इस दूसरे प्रकार में आती है।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

रूपता श्रुतियों से और स्मृति-पुराणों से सिद्ध है। मुख्य ऋषि, पितृ, देव आदि प्राण-रूप ही हैं। उनके सम्बन्ध से ही इन नामों का अन्यत्र भी व्यवहार हुआ है। इनमें ऋषि ७, पितृ ६, देव ३३, असुर ९९ और गन्धर्व २७ हैं। ये पूर्ण प्रजापति के रूप हैं। अतएव, इनका आयतन पूर्णवृत्त-मण्डल (गोलाकार)-रूप होता है। अक्षरपुरुष के निरूपण में बताई गई प्रक्रिया के अनुसार जब इन्द्र अक्षरपुरुष के द्वारा चारों ओर प्राण प्रसारित किये जाते हैं, तब एक तरफ जानेवाले प्राणों का समूह, एक मनु नाम का प्राण पृथक् बन जाता है। वह वृत्ताकार नहीं होता। एक तरफ जानेवाला अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्ब-रूप में बनता है, इसे अर्द्धन्दु कहते हैं। इसके भी दो भेद होते हैं : एक आग्नेय प्राण और दूसरा सौम्य प्राण। आग्नेय प्राण पुरुष कहे जाते हैं, और सौम्य प्राण स्त्री। इन्हीं की प्रधानता से प्राणियों में पुरुष और स्त्री ये दो भेद हो जाते हैं। इसी आशय को श्रुति ने बताया है : “प्रजापति ने अपने शरीर को दो भागों में विभक्त किया। वे दोनों पति-पत्नी-रूप हुए। इसीलिए, पुरुष और स्त्री एक चने की दो दाल की तरह आधे-आधे हैं। इनमें प्रत्येक पृथक् सृष्टि करने में असमर्थ है। विवाह द्वारा जब दोनों संयोजित किये जाते हैं, तब उस पुरुष के अर्द्धभाग को स्त्री पूर्ण कर देती है, और वे दोनों मिलकर यज्ञ के अधिकारी और सृष्टि में समर्थ हो जाते हैं।”^१ इसीलिए, प्राणियों की सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है। मिथुन नाम दो का है। दो के योग से जो सृष्टि हो, वह मैथुनी सृष्टि हुई।

इस मनु-प्राण के भी पाँच भेद हैं : पुरुष (मनुष्य), अश्व, गो, अज और अवि, जैसा कि क्षरपुरुष विराट्की सृष्टि बताते हुए पुरुषसूक्त में आनात है :

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोमयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(ऋ०, १०।१०।१०)

इसका पूर्वोक्त ही आशय है कि विराट् से अश्व, दोनों तरफ दाँतवाले (मनुष्यादि), गो, अज और अवि उत्पन्न हुए। आजकल के कई विद्वान् इससे यह कल्पना करते हैं कि वैदिक काल में आर्यों को चार ही पशुओं (अश्व, गो, बकरा और भेड़) का परिचय था। अन्य पशुओं को वे नहीं जानते थे। अतएव, मन्त्र में चार का ही नाम लिया है। किन्तु, वैदिक परिभाषा को जो समझते हैं, उनकी दृष्टि में यह कल्पना निरी उपहासास्पद है। वेद ने तो प्राणों के विस्तार के प्रसंग में पाँच नाम लिये हैं, जिसका यह आशय है कि मनु-प्राण पाँच प्रकार का ही होता है। उनके ही परस्पर-सम्बन्ध और तारतम्य से अनन्त प्राणी बन जाते हैं। इसीलिए, इनके ही सम्बन्ध से रासभ आदि का नाम भी शतपथ आदि ब्राह्मणों में स्पष्ट लिया गया है। मन्त्र-संहिताओं में भी ग्राम और आरण्यक पशुओं के नाम बहुधा प्राप्त होते हैं :

१. स वै नैव रेमे, तस्मादेकाकी न रमते। स द्वितीयमैच्छत्। स हैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ। स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाऽभवतां, तस्मादिदमर्द्धवृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः, तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यते।

—बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ४, कण्विका ३।

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

शब्दानुक्रमणी

अ

अंगिरा : ९८, ९९, १०३, १३५, २३१
 अक्षर : ९२, १३०, २५०
 अक्षर-कला : १०२
 अक्षरपुरुष : ८६, ८८, ८९, ९०, ९१,
 १००, १०२, १०५, १३२,
 १३५, २४७, २५७, २५८
 अगति : १४०
 अग्नि : १३, १८, २९, ३४, ३८, ३९,
 ४२, ४४, ४५, ५५, ६२, ६३, ८९,
 ९०, ९१, ९४, ९५, ९६, ९८, ९९,
 १००, १०२, १०३, १०८, ११०,
 ११५, १२८, १३१, १३५, १३८,
 १४४, १५४, १६४, १६५, १६६,
 १६९, १७७, १८०, २५०, २५३,
 २५६, २५८, २५९, २ १
 अग्निगर्भा : १०५
 अग्नि-तत्त्व : ३९, ९८, १०९, ११३, १३५
 अग्निदेव : १६३
 अग्निदेवता : ७
 अग्निप्रधान : २४८
 अग्निप्राण : १३, २९
 अग्निष्वात्ता : १३५
 अग्निहोत्र : १४६, २२२
 अघमर्षण सूक्त : १६८
 अघोर : २४६
 अच्छ : १४१

अच्छावाकीय : २५०
 अज : ५१, ५२
 अजपृश्नि : ५२
 अजवीथी : १५९
 अजातशत्रु : ७७
 अडाडा : २२४
 अड्डा : २२४
 अणु : ३६
 अणुतत्त्व : १०७
 अणुव्रत : २६२
 अतिशय : २११
 अतिशयाधान : २०८, २०९, २१०, २११,
 २१२
 अन्नि : २३१
 अथर्ववेद : ४४, ९७, १०९, ११० (टि०),
 १५७ (टि०), १६०, १६१
 अथर्ववेद-संहिता : ६९
 अथर्वश्रुति : १०९ (टि०)
 अथर्व-संहिता : १८२
 अथर्वगिरस् : ४८, ९८
 अद्वैतभाव : २२७
 अधम-मार्ग : १४९
 अधर-समुद्र : १०५
 अधिदैववादी : २१
 अधोगति : १४२, १४९
 अध्यात्मवाद : १९५
 अध्यात्मवादी : २१
 अध्वर्यु : ६९, ७०, १७८, १८९

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

पट को बुन रहा है। पंचभूत को वैदिक परिभाषा में वाक् भी कहते हैं। पाँच भूतों में आकाश सबसे सूक्ष्म है। आकाश का गुण शब्द या वाक् है। अतएव, पाँच भूतों के लिए वाक् यह सरल प्रतीक मान लिया गया था। यह समस्त सृष्टि पाँच भूतों की रचना है। जो प्रधान या प्रकृति है, वह तीन गुणों के तारतम्य से पंचभूतों के रूप में परिणत होती है। इस पंचभूतात्मक रचना को वाक् कहते हैं। 'वाङ्मयः प्राणमयो मनोमय एष आत्मा'—उपनिषदों की यह परिभाषा सर्वथा सुनिश्चित है। इसका अर्थ है कि जितनी भी अभिव्यक्त सृष्टि है, उसके मूल में प्रज्ञा या मनस्तत्त्व, प्राण-तत्त्व और पंचभूत इनकी सत्ता है। मन, प्राण, वाक् का त्रिक क्रमशः सत्त्व, रज और तम कहा जाता है। यह त्रिक विश्व-रचना का आधार है। सृष्टि की वैदिक कल्पना त्रिक पर समाश्रित है। तीन लोक, तीन देव, तीन छन्द, तीन मात्राएँ आदि अनेक रूपों में त्रिक की व्याख्या की जा सकती है। मैत्रायणी उपनिषद् में त्रिक की अति सुन्दर व्याख्या पाई जाती है। वहाँ कहाँ है, ये जो अ उ म् अक्षर हैं, वे ही उस त्रिपाद् ब्रह्मा की भास्वती तनू हैं, जिसे ओम् भी कहते हैं। स्त्री-पुं-नपुंसक, यह लिंगवती तनू है। अग्नि, वायु, आदित्य इन तीनों का नाम भास्वती तनू है। ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु यह अधिपतिवती तनू है। ऋक्, यजु, साम यह विज्ञानवती तनू है। भूर्भुवःस्वः यह लोकवती; भूत, भव्य, भविष्यत् यह कालवती; प्राण, अग्नि, सूर्य यह प्राणवती; अन्न, आप्, चन्द्रमा यह आप्यायनवती; गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय यह मुखवती; बुद्धि, मन, अहंकार यह चेतनवती और प्राण, अपान, व्यान यह प्राणवती तनू है। ये सब प्रजापति के ही रूप हैं। जब ओम् या प्राणसंज्ञक अक्षर-ब्रह्मा का उच्चारण किया जाता है, तब उसी के पर और अपर ये दो रूप कहे जाते हैं। जो त्रिक के अन्तर्गत है, वह अपर रूप है और जो त्रिक से अतीत है, वही पर रूप है। जो पर है, उसे अव्यय भी कहते हैं। 'परे अव्यये सर्व एकीभवन्ति', अथवा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह अव्यय या परब्रह्म के लिए ही कहा जाता है। उसे ही त्रिपाद् और ऊर्ध्व भी कहते हैं।

अग्निविद्या

वैदिक सृष्टि-विद्या की दृष्टि से प्रजापति-विद्या का बहुत अधिक महत्त्व है। अग्नि-विद्या और संवत्सर-विद्या उसी के दो रूप हैं। अग्नि-विद्या या शक्ति-तत्त्व और संवत्सर-विद्या या काल-तत्त्व इन दोनों के सम्मिलित रूप का नाम यज्ञ-विद्या है। वैदिक तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से अग्नि-विद्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रजापति, ब्रह्मा, महाकाल, शक्ति-तत्त्व ये सब अग्नि के ही रूप हैं। मनु ने जिसे तमोभूत अप्रज्ञात, अलक्षण और प्रसुप्त अवस्था कहा है, उसी के घरातल पर अग्नि का जन्म होता है। ज्ञान और कर्म की जितनी शक्ति हैं, उन सबका प्रतीक अग्नि है। 'अग्निः सर्वा देवताः', जितने देव हैं, सब अग्नि के रूप हैं, यह ऐतरेय की परिभाषा है। प्रश्न होता है कि अग्नि-तत्त्व क्या है? क्या चूल्हे में जलनेवाली और काष्ठ से उत्पन्न होनेवाली अग्नि कोई देवता है? वेद में किस अग्नि का वर्णन है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मूल और तूल दोनों रूपों में जितनी शक्ति और उसके भेद हैं, वे सब अग्नि के ही विभिन्न

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति

म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना